

Para 1

Sipara 1 of 30 · 148 Ayahs · Translation: Hindi

Al-Faatiha

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम है।

2

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

तारीफ़ अल्लाह ही के लिये है जो तमाम क़ायनात का रब है।

3

الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

रहमान और रहीम है।

4

مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ

रोज़े जज़ा का मालिक है।

5

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ

हम तेरी ही इबादत करते हैं, और तुझ ही से मदद मांगते हैं।

6

اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ

हमें सीधा रास्ता दिखा।

7

صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ

उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इनाम फ़रमाया, जो माअतूब नहीं हुए, जो भटके हुए नहीं हैं।

Al-Baqara

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अलीफ़ लाम मीम

2

ذَٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ ۚ فِيهِ ۙ هُدًى ۙ لِّلْمُتَّقِينَ

(ये) वह किताब है। जिस (के किताबे खुदा होने) में कुछ भी शक नहीं (ये) परहेज़गारों की रहनुमा है

3

الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ

जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं और (पाबन्दी से) नमाज़ अदा करते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से (राहे खुदा में) खर्च करते हैं

4

وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ

और जो कुछ तुम पर (ऐ रसूल) और तुम से पहले नाज़िल किया गया है उस पर ईमान लाते हैं और वही आखिरत का यक़ीन भी रखते हैं

5

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى ۙ مِّن رَّبِّهِمْ ۙ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

यही लोग अपने परवरदिगार की हिदायत पर (आमिल) हैं और यही लोग अपनी दिली मुरादे पाएँगे

6

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۙ سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र इख़तेयार किया उनके लिए बराबर है (ऐ रसूल) ख़्वाह (चाहे) तुम उन्हें डराओ या न डराओ वह ईमान न लाएँगे

7

خَتَمَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَعَلَى سَمْعِهِمْ ۖ وَعَلَى أَبْصَارِهِمْ غِشْوَةٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۖ

उनके दिलों पर और उनके कानों पर (नज़र करके) खुदा ने तसदीक़ कर दी है (कि ये ईमान न लाएँगे) और उनकी आँखों पर परदा (पड़ा हुआ) है और उन्हीं के लिए (बहुत) बड़ा अज़ाब है

8

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ ءَامَنَّا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ

और बाज़ लोग ऐसे भी हैं जो (ज़बान से तो) कहते हैं कि हम खुदा पर और क़यामत पर ईमान लाए हालाँकि वह दिल से ईमान नहीं लाए

9

يُخَدِّعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ

खुदा को और उन लोगों को जो ईमान लाए धोखा देते हैं हालाँकि वह अपने आपको धोखा देते हैं और कुछ शऊर नहीं रखते हैं

10

فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ ۖ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ

उनके दिलों में मर्ज़ था ही अब खुदा ने उनके मर्ज़ को और बढ़ा दिया और चूँकि वह लोग झूठ बोला करते थे इसलिए उन पर तकलीफ़ देह अज़ाब है

11

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا ۖ فِي الْأَرْضِ قَالُوا ۖ إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ

और जब उनसे कहा जाता है कि मुल्क में फ़साद न करते फ़िरो (तो) कहते हैं कि हम तो सिर्फ़ इसलाह करते हैं

12

أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَكِنْ لَا يَشْعُرُونَ

ख़बरदार हो जाओ बेशक़ यही लोग फ़सादी हैं लेकिन समझते नहीं

13

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ ءَامِنُوا ۖ كَمَا ءَامَنَ النَّاسُ قَالُوا ۖ أَنُؤْمِنُ كَمَا ءَامَنَ السُّفَهَاءُ ۚ أَلَا
 إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَكِن لَّا يَعْلَمُونَ

और जब उनसे कहा जाता है कि जिस तरह और लोग ईमान लाए हैं तुम भी ईमान लाओ तो कहते हैं क्या हम भी उसी तरह ईमान लाएँ जिस तरह और बेवकूफ़ लोग ईमान लाएँ, खबरदार हो जाओ लोग बेवकूफ़ हैं लेकिन नहीं जानते

14

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ ءَامِنُوا ۖ قَالُوا ۖ ءَامَنَّا وَإِذَا خَلَوْا ۖ إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ قَالُوا ۖ إِنَّا
 مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزَءُونَ

और जब उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान ला चुके तो कहते हैं हम तो ईमान ला चुके और जब अपने शैतानों के साथ तनहा रह जाते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं हम तो (मुसलमानों को) बनाते हैं

15

اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ

(वह क्या बनाएँगे) खुदा उनको बनाता है और उनको ढील देता है कि वह अपनी सरकशी में ग़लत पेचाँ (उलझे) रहें

16

أَوَلَيْكَ الَّذِينَ اشْتَرَوْا ۖ الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَحِيتَ تَجَرَّتُهُمْ وَمَا كَانُوا ۚ مُهْتَدِينَ

यही वह लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही खरीद ली, फिर न उनकी तिजारत ही ने कुछ नफ़ा दिया और न उन लोगों ने हिदायत ही पाई

17

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا ۖ فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ۖ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ
 وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمٍ ۖ لَّا يَبْصِرُونَ

उन लोगों की मिसाल (तो) उस शख्स की सी है जिसने (रात के वक्त मजमे में) भड़कती हुई आग रौशन की फिर जब आग (के शोले) ने उसके गिर्दों पेश (चारों ओर) खूब उजाला कर दिया तो खुदा ने उनकी रौशनी ले ली और उनको घटाटोप अंधेरे में छोड़ दिया

18

صُمٌّ ۖ بُكْمٌ عُمَىٰ ۖ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ

कि अब उन्हें कुछ सुझाई नहीं देता ये लोग बहरे गूँगे अन्धे हैं कि फिर अपनी गुमराही से बाज़ नहीं आ सकते

أَوْ كَصَيِّبٍ ۚ مِّنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمٌ ۚ وَرَعْدٌ ۚ وَبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُونَ أَصْبَعَهُمْ فِي
ءَاذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۚ وَاللَّهُ مُحِيطٌ ۚ بِالْكَافِرِينَ

या उनकी मिसाल ऐसी है जैसे आसमानी बारिश जिसमें तारिकियाँ गर्ज बिजली हो मौत के खौफ से कड़क के मारे अपने कानों में ऊँगलियाँ दे लेते हैं हालाँकि खुदा काफ़िरो को (इस तरह) घेरे हुए है (कि उसक हिल नहीं सकते)

يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ أَبْصَارَهُمْ ۚ كُلَّمَا أَضَاءَ لَهُمْ مَّشَوْا ۚ فِيهِ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ
قَامُوا ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَرِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ ۚ
قَدِيرٌ ۚ

क़रीब है कि बिजली उनकी आँखों को चौन्धिया दे जब उनके आगे बिजली चमकी तो उस रौशनी में चल खड़े हुए और जब उन पर अंधेरा छा गया तो (ठिठके के) खड़े हो गए और खुदा चाहता तो यूँ भी उनके देखने और सुनने की कूवतें छीन लेता बेशक खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَعْبُدُوا ۚ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ

ऐ लोगों अपने परवरदिगार की इबादत करो जिसने तुमको और उन लोगों को जो तुम से पहले थे पैदा किया है अजब नहीं तुम परहेज़गार बन जाओ

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فُرُشًا ۚ وَالسَّمَاءَ بِنَاءً ۚ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۚ فَأَخْرَجَ
بِهِ ۚ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا ۚ لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَنْدَادًا ۚ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ

जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन का बिछौना और आसमान को छत बनाया और आसमान से पानी बरसाया फिर उसी ने तुम्हारे खाने के लिए बाज़ फल पैदा किए पस किसी को खुदा का हमसर न बनाओ हालाँकि तुम खूब जानते हो

وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ ۚ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا ۚ بِسُورَةٍ ۚ مِّن مِّثْلِهِ ۚ وَادْعُوا ۚ
شُهَدَاءَكُمْ مِّن دُونِ اللَّهِ ۚ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ

और अगर तुम लोग इस कलाम से जो हमने अपने बन्दे (मोहम्मद) पर नाज़िल किया है शक में पड़े हो पस अगर तुम सच्चे हो तो तुम (भी) एक सूरा बना लाओ और खुदा के सिवा जो भी तुम्हारे मददगार हों उनको भी बुला लो

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا ۚ وَلَنْ تَفْعَلُوا ۚ فَاتَّقُوا ۚ النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۚ
أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ

पस अगर तुम ये नहीं कर सकते हो और हरगिज़ नहीं कर सकोगे तो उस आग से डरो सिके ईधन आदमी और पत्थर होंगे और काफ़िरों के लिए तैयार की गई है

وَبَشِّرِ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ ۚ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رَزَقُوا ۚ قَالُوا ۚ هَذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ
قَبْلُ ۚ وَأُتُوا بِهِ ۚ مُتَشَبِهًا ۚ وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ ۚ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उनको (ऐ पैग़म्बर) खुशख़बरी दे दो कि उनके लिए (बेहिश्त के) वह बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरे जारी हैं जब उन्हें इन बाग़ात का कोई मेवा खाने को मिलेगा तो कहेंगे ये तो वही (मेवा है जो पहले भी हमें खाने को मिल चुका है) (क्योंकि) उन्हें मिलती जुलती सूरत व रंग के (मेवे) मिला करेंगे और बेहिश्त में उनके लिए साफ सुथरी बीवियाँ होगी और ये लोग उस बाग़ में हमेशा रहेंगे

ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيٰ ۚ أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا ۚ مَا بَعُوضَةً ۚ فَمَا فَوْقَهَا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ
ءَامَنُوا ۚ فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ
اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا ۚ ۚ يُضِلُّ بِهِ ۚ كَثِيرًا ۚ وَيَهْدِي بِهِ ۚ كَثِيرًا ۚ ۚ وَمَا يُضِلُّ بِهِ ۚ إِلَّا
الْفَاسِقِينَ

बेशक खुदा मच्छर या उससे भी बड़कर (हकीर चीज़) की कोई मिसाल बयान करने में नहीं झेंपता पस जो लोग ईमान ला चुके हैं वह तो ये यकीन जानते हैं कि ये (मिसाल) बिल्कुल ठीक है और ये परवरदिगार की तरफ़ से है (अब रहे) वह लोग जो काफ़िर हैं पस वह बोल उठते हैं कि खुदा का उस मिसाल से क्या मतलब है, ऐसी मिसाल से खुदा बहुतेरों की हिदायत करता है मगर गुमराही में छोड़ता भी है तो ऐसे बदकारों को

الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ ۙ بَعْدِ مِيثَاقِهِ ۚ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ ۚ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ

जो लोग खुदा के एहदो पैमान को मज़बूत हो जाने के बाद तोड़ डालते हैं और जिन (ताल्लुकात) का खुदा ने हुक्म दिया है उनको क़ताआ कर देते हैं और मुल्क में फ़साद करते फिरते हैं, यही लोग घाटा उठाने वाले हैं

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

(हाँए) क्यों कर तुम खुदा का इन्कार कर सकते हो हालाँकि तुम (माओं के पेट में) बेजान थे तो उसी ने तुमको ज़िन्दा किया फिर वही तुमको मार डालेगा, फिर वही तुमको (दोबारा क़यामत में) ज़िन्दा करेगा फिर उसी की तरफ लौटाए जाओगे

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۚ ثُمَّ أَسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

वही तो वह (खुदा) है जिसने तुम्हारे (नफ़े) के ज़मीन की कुल चीज़ों को पैदा किया फिर आसमान (के बनाने) की तरफ़ मुतावज्जेह हुआ तो सात आसमान हमवार (व मुसतहकम) बना दिए और वह (खुदा) हर चीज़ से (ख़ूब) वाक़िफ़ है

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ ۙ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۚ قَالُوا ۙ أَتَجْعَلُ فِيهَا مَن يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۚ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ

और (ऐ रसूल) उस वक्त क़ो याद करो जब तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं (अपना) एक नाएब ज़मीन में बनानेवाला हूँ (फरिश्ते ताज्जुब से) कहने लगे क्या तू ज़मीन ऐसे शख्स को पैदा करेगा जो ज़मीन में फ़साद और ख़ूँरज़ियाँ करता फ़िरे हालाँकि (अगर) ख़लीफ़ा बनाना है (तो हमारा ज़्यादा हक़ है) क्योंकि हम तेरी तारीफ़ व तसबीह करते हैं और तेरी पाकीज़गी साबित करते हैं तब खुदा ने फ़रमाया इसमें तो शक़ ही नहीं कि जो मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते

31

وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَائِكَةِ فَقَالَ أَنْذِ بِبُؤْنِي بِأَسْمَاءِ هَؤُلَاءِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ

और (आदम की हकीकत ज़ाहिर करने की गरज़ से) आदम को सब चीज़ों के नाम सिखा दिए फिर उनको फ़रिश्तों के सामने पेश किया और फ़रमाया कि अगर तुम अपने दावे में कि हम मुस्तहक़े ख़िलाफ़त हैं। सच्चे हो तो मुझे इन चीज़ों के नाम बताओ

32

قَالُوا ۖ سُبْحَنَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ

तब फ़रिश्तों ने (आज़िज़ी से) अर्ज़ की तू (हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है हम तो जो कुछ तूने बताया है उसके सिवा कुछ नहीं जानते तू बड़ा जानने वाला, मसलहतों का पहचानने वाला है

33

قَالَ يٰٓآدَمُ أَنْذِرْهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ ۖ فَلَمَّا أَنْذَرَهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ

(उस वक़्त खुदा ने आदम को) हुक्म दिया कि ऐ आदम तुम इन फ़रिश्तों को उन सब चीज़ों के नाम बता दो बस जब आदम ने फ़रिश्तों को उन चीज़ों के नाम बता दिए तो खुदा ने फ़रिश्तों की तरफ़ ख़िताब करके फ़रमाया क्यों, मैं तुमसे न कहता था कि मैं आसमानों और ज़मीनों के छिपे हुए राज़ को जानता हूँ, और जो कुछ तुम अब ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम छिपाते थे (वह सब) जानता हूँ

34

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا ۖ إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ

और (उस वक़्त को याद करो) जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो सब के सब झुक गए मगर शैतान ने इन्कार किया और गुरुर में आ गया और काफ़िर हो गया

35

وَقُلْنَا يٰٓآدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ

और हमने आदम से कहा ऐ आदम तुम अपनी बीवी समेत बेहिश्त में रहा सहा करो और जहाँ से तुम्हारा जी चाहे उसमें से ब फरागत खाओ (पियो) मगर उस दरख़्त के पास भी न जाना (वरना) फिर तुम अपना आप नुक़सान करोगे

فَأَزَلَّهُمَا الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ ۖ وَقُلْنَا اهْبِطُوا ۚ بَعْضُكُم لِبَعْضٍ
عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ ۚ وَمَتَّعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۚ

तब शैतान ने आदम व हौव्वा को (धोखा देकर) वहाँ से डगमगाया और आखिर कार उनको जिस (ऐश व राहत) में थे उनसे निकाल फेंका और हमने कहा (ऐ आदम व हौव्वा) तुम (ज़मीन पर) उतर पड़ो तुममें से एक का एक दुश्मन होगा और ज़मीन में तुम्हारे लिए एक खास वक्त (क़यामत) तक ठहराव और ठिकाना है

فَتَلَقَّىٰ آدَمُ مِنْ رَبِّهِ ۚ كَلِمَاتٍ ۚ فَتَابَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّهُ ۖ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

फिर आदम ने अपने परवरदिगार से (माज़रत के चन्द अल्फाज़) सीखे पस खुदा ने उन अल्फाज़ की बरकत से आदम की तौबा कुबूल कर ली बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला मेहरबान है

قُلْنَا اهْبِطُوا ۚ مِنْهَا جَمِيعًا ۚ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِنِّي هُدًى ۚ فَمَنْ تَبَعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

(और जब आदम को) ये हुक्म दिया था कि यहाँ से उतर पड़ो (तो भी कह दिया था कि) अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से हिदायत आए तो (उसकी पैरवी करना क्योंकि) जो लोग मेरी हिदायत पर चलेंगे उन पर (क़यामत) में न कोई ख़ौफ़ होगा

وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَكَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

और न वह रंजीदा होंगे और (ये भी याद रखो) जिन लोगों ने कुफ़्र इख़तेयार किया और हमारी आयतों को झुठलाया तो वही जहन्नुमी हैं और हमेशा दोज़ख़ में पड़े रहेंगे

يٰۤاَيُّهَا اِسْرَءِيْلَ اذْكُرُوا ۚ نِعْمَتِيَ الَّتِيۤ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ ۖ وَاَوْفُوا ۚ بِعَهْدِيۤ اَوْفِ بِعَهْدِكُمْ
وَإِيَّيَ فَارْهَبُونَ

ऐ बनी इसराईल (याक़ूब की औलाद) मेरे उन एहसानात को याद करो जो तुम पर पहले कर चुके हैं और तुम मेरे एहद व इकरार (ईमान) को पूरा करो तो मैं तुम्हारे एहद (सवाब) को पूरा करूँगा, और मुझ ही से डरते रहो

وَأَمِنُوا ۚ بِمَا أُنزِلَتْ مُصَدِّقًا ۚ لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُونُوا ۚ أَوَّلَ كَافِرٍ ۚ بِهِ ۚ وَلَا تَشْتَرُوا ۚ بِأَيْتِي ثَمَنًا ۚ قَلِيلًا ۚ وَإِيَّيَ فَاتَّقُونَ

और जो (कुरान) मैंने नाज़िल किया वह उस किताब (तौरत) की (भी) तसदीक करता हूँ जो तुम्हारे पास है और तुम सबसे चले उसके इन्कार पर मौजूद न हो जाओ और मेरी आयतों के बदले थोड़ी कीमत (दुनियावी फायदा) न लो और मुझ ही से डरते रहो

وَلَا تَلْبِسُوا ۚ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا ۚ الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ

और हक़ को बातिल के साथ न मिलाओ और हक़ बात को न छिपाओ हालाँकि तुम जानते हो और पाबन्दी से नमाज़ अदा करो

وَأَقِيمُوا ۚ الصَّلَاةَ وَءَاتُوا ۚ الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا ۚ مَعَ الرُّكْعَيْنِ

और ज़कात दिया करो और जो लोग (हमारे सामने) इबादत के लिए झुकते हैं उनके साथ तुम भी झुका करो

ۚ أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

और तुम लोगों से नेकी करने को कहते हो और अपनी ख़बर नहीं लेते हालाँकि तुम किताबे खुदा को (बराबर) रटा करते हो तो तुम क्या इतना भी नहीं समझते

وَأَسْتَعِينُوا ۚ بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ۚ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ

और (मुसीबत के वक्त) सब्र और नमाज़ का सहारा पकड़ो और अलबत्ता नमाज़ दूभर तो है मगर उन खाक़सार्ों पर (नहीं) जो बख़ूबी जानते हैं

الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلْقُوا ۚ رَبَّهُمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ

कि वह अपने परवरदिगार की बारगाह में हाज़िर होंगे और ज़रूर उसकी तरफ लौट जाएँगे

يٰۤأَيُّهَا إِسْرَءِيلُ اذْكُرُوا ۚ نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ

ऐ बनी इसराइल मेरी उन नेअमतों को याद करो जो मैंने पहले तुम्हें दी और ये (भी तो सोचो) कि हमने तुमको सारे जहान के लोगों से बढ़ा दिया

وَاتَّقُوا ۚ يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا ۚ وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَعَةٌ ۚ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ ۚ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ

और उस दिन से डरो (जिस दिन) कोई शख्स किसी की तरफ से न फिदिया हो सकेगा और न उसकी तरफ से कोई सिफारिश मानी जाएगी और न उसका कोई मुआवज़ा लिया जाएगा और न वह मदद पहुँचाए जाएँगे

وَإِذْ نَجَّيْنَكُمْ مِّنْ ءَالِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُم سُوءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۚ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ ۚ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ۚ

और (उस वक्त को याद करो) जब हमने तुम्हें (तुम्हारे बुर्जगो को) फिरऔन (के पन्जे) से छुड़ाया जो तुम्हें बड़े-बड़े दुख दे के सताते थे तुम्हारे लड़कों पर छुरी फेरते थे और तुम्हारी औरतों को (अपनी खिदमत के लिए) ज़िन्दा रहने देते थे और उसमें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से (तुम्हारे सब्र की) सख्त आजमाइश थी

وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَأَنْجَيْنَكُمْ وَأَغْرَقْنَا ءَالِ فِرْعَوْنَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ

और (वह वक्त भी याद करो) जब हमने तुम्हारे लिए दरिया को टुकड़े-टुकड़े किया फिर हमने तुमको छुटकारा दिया

وَإِذْ وَعَدْنَا مُوسَىٰ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ۚ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِن بَعْدِهِ ۚ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ

और फिरऔन के आदमियों को तुम्हारे देखते-देखते डुबो दिया और (वह वक्त भी याद करो) जब हमने मूसा से चालीस रातों का वायदा किया था और तुम लोगों ने उनके जाने के बाद एक बछड़े को (परसतिश के लिए खुदा) बना लिया

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُم مِّن بَعْدِ ذَلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

हालाँकि तुम अपने ऊपर ज़ुल्म जोत रहे थे फिर हमने उसके बाद भी दरगुज़र की ताकि तुम शुक्र करो

وَإِذْ آتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ

और (वह वक्त भी याद करो) जब मूसा को (तौरित) अता की और हक़ और बातिल को जुदा करनेवाला क़ानून (इनायत किया) ताके तुम हिदायत पाओ

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ ۖ يَقَوْمِ إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوبُوا ۚ إِلَىٰ بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوا ۚ أَنْفُسَكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ ۚ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۚ إِنَّهُ ۚ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

और (वह वक्त भी याद करो) जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम तुमने बछड़े को (खुदा) बना के अपने ऊपर बड़ा सख्त जुल्म किया तो अब (इसके सिवा कोई चारा नहीं कि) तुम अपने खालिक की बारगाह में तौबा करो और वह ये है कि अपने को क़त्ल कर डालो तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक तुम्हारे हक़ में यही बेहतर है, फिर जब तुमने ऐसा किया तो खुदा ने तुम्हारी तौबा कुबूल कर ली बेशक वह बड़ा मेहरबान माफ़ करने वाला है

وَإِذْ قُلْتُمْ يَمُوسَىٰ لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَىٰ اللَّهَ جَهْرَةً ۚ فَآخَذَتْكُمْ الصُّعِقَةُ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ

और (वह वक्त भी याद करो) जब तुमने मूसा से कहा था कि ऐ मूसा हम तुम पर उस वक्त तक ईमान न लाएँगे जब तक हम खुदा को ज़ाहिर बज़ाहिर न देख ले उस पर तुम्हें बिजली ने ले डाला, और तुम तकते ही रह गए

ثُمَّ بَعَثْنَاكَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

फिर तुम्हें तुम्हारे मरने के बाद हमने जिला उठाया ताकि तुम शुक्र करो

وَضَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّاءَ وَالسَّلْوَٰى ۚ كُلُوا ۚ مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ ۚ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

और हमने तुम पर अब्र का साया किया और तुम पर मन व सलवा उतारा और (ये भी तो कह दिया था कि) जो सुथरी व नफीस रोज़िया तुम्हें दी हैं उन्हें शौक़ से खाओ, और उन लोगों ने हमारा तो कुछ बिगड़ा नहीं मगर अपनी जानों पर सितम ढाते रहे

وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا ۖ وَادْخُلُوا الْبَابَ
سُجَّدًا ۖ وَقُولُوا ۖ حِطَّةٌ ۖ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ ۖ وَسَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ

और (वह वक्त भी याद करो) जब हमने तुमसे कहा कि इस गाँव (अरीहा) में जाओ और इसमें जहाँ चाहो फरागत से खाओ (पियो) और दरवाज़े पर सजदा करते हुए और ज़बान से हिता बख़्शिश कहते हुए आओ तो हम तुम्हारी ख़ता ये बख़्श देगे और हम नेकी करने वालों की नेकी (सवाब) बढ़ा देंगे

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ رِجْزًا ۖ
مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ

तो जो बात उनसे कही गई थी उसे शरीरों ने बदलकर दूसरी बात कहनी शुरू कर दी तब हमने उन लोगों पर जिन्होंने शरारत की थी उनकी बदकारी की वजह से आसमानी बला नाज़िल की

ۖ وَإِذِ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ ۖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ
أَثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ ۖ مَّشْرِبَهُمْ ۖ كُلُوا ۖ وَاشْرَبُوا ۖ مِنْ رِّزْقِ
اللَّهِ وَلَا تَعْتُوا ۖ فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ

और (वह वक्त भी याद करो) जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी माँगा तो हमने कहा (ऐ मूसा) अपनी लाठी पत्थर पर मारो (लाठी मारते ही) उसमें से बारह चश्में फूट निकले और सब लोगों ने अपना-अपना घाट बख़ूबी जान लिया और हमने आम इजाज़त दे दी कि खुदा की दी हुई रोज़ी से खाओ पियो और मुल्क में फ़साद न करते फ़िरो

وَإِذْ قُلْتُمْ يَمُوسَىٰ لَنْ نَّصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ ۚ وَحِدٍ ۚ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا
تُنْبِتُ الْأَرْضُ مِنْ ۚ بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصِلَهَا ۚ قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ
الَّذِي هُوَ أَذْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ ۚ أَهْبِطُوا ۚ مِصْرَ ۚ فَإِنَّ لَكُمْ مَّا سَأَلْتُمْ ۚ وَضُرِبَتْ
عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَاءُوا بِغَضَبٍ ۚ مِنَ اللَّهِ ۚ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا ۚ يَكْفُرُونَ
بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيَّ ۚ نَ بَغَيْرِ الْحَقِّ ۚ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا ۚ وَكَانُوا ۚ يَعْتَدُونَ

(और वह वक्त भी याद करो) जब तुमने मूसा से कहा कि ऐ मूसा हमसे एक ही खाने पर न रहा जाएगा तो आप हमारे लिए अपने परवरदिगार से दुआ कीजिए कि जो चीज़े ज़मीन से उगती हैं जैसे साग पात तरकारी और ककड़ी और गेहूँ या (लहसुन) और मसूर और प्याज़ (मन व सलवा) की जगह पैदा करें (मूसा ने) कहा क्या तुम ऐसी चीज़ को जो हर तरह से बेहतर है अदना चीज़ से बदलन चाहते हो तो किसी शहर में उतर पड़ो फिर तुम्हारे लिए जो तुमने माँगा है सब मौजूद है और उन पर रूसवाई और मोहताजी की मार पड़ी और उन लोगों ने क़हरे खुदा की तरफ पलटा खाया, ये सब इस सबब से हुआ कि वह लोग खुदा की निशानियों से इन्कार करते थे और पैग़म्बरों को नाहक शहीद करते थे, और इस वजह से (भी) कि वह नाफ़रमानी और सरकशी किया करते थे

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَالَّذِينَ هَادُوا ۚ وَالنَّصَارَىٰ وَالصَّبِيْنَ مِنْ ءَامَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْءَاخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

बेशक मुसलमानों और यहूदियों और नसरानियों और ला मज़हबों में से जो कोई खुदा और रोज़े आखिरत पर ईमान लाए और अच्छे-अच्छे काम करता रहे तो उन्हीं के लिए उनका अज़्र व सवाब उनके खुदा के पास है और न (क़यामत में) उन पर किसी का ख़ौफ़ होगा न वह रंजीदा दिल होंगे

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا ۚ مَا ءَاتَيْنُكُمْ بِقُوَّةٍ ۚ وَاذْكُرُوا ۚ مَا
فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ

और (वह वक्त याद करो) जब हमने (तामीले तौरत) का तुमसे एकरार कर लिया और हमने तुम्हारे सर पर तूर से (पहाड़ को) लाकर लटकाया और कह दिया कि तौरत जो हमने तुमको दी है उसको मज़बूत पकड़े रहो और जो कुछ उसमें है उसको याद रखो

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ ۚ بَعْدِ ذَٰلِكَ ۚ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ ۚ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخُسْرِينَ

ताकि तुम परहेज़गार बनो फिर उसके बाद तुम (अपने एहदो पैमान से) फिर गए पस अगर तुम पर खुदा का फज़ल और उसकी मेहरबानी न होती तो तुमने सख्त घाटा उठाया होता

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ أُعْتَدُوا ۚ مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا ۚ قِرَدَةً خَاسِئِينَ

और अपनी क्रौम से उन लोगों की हालत तो तुम बखूबी जानते हो जो शम्बे (सनीचर) के दिन अपनी हद से गुज़र गए (कि बावजूद मुमानिअत शिकार खेलने निकले) तो हमने उन से कहा कि तुम राइन्दे गए बन्दर बन जाओ (और वह बन्दर हो गए)

فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا ۚ لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً ۚ لِّلْمُتَّقِينَ

पस हमने इस वाक़ये से उन लोगों के वास्ते जिन के सामने हुआ था और जो उसके बाद आनेवाले थे अज़ाब करार दिया, और परहेज़गारों के लिए नसीहत

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا ۚ بَقَرَةً ۚ ۚ قَالُوا ۚ أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۚ ۚ قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ

और (वह वक्त याद करो) जब मूसा ने अपनी क्रौम से कहा कि खुदा तुम लोगों को ताकीदी हुक्म करता है कि तुम एक गाय ज़िबाह करो वह लोग कहने लगे क्या तुम हमसे दिल्लगी करते हो मूसा ने कहा मैं खुदा से पनाह माँगता हूँ कि मैं जाहिल नूँ

قَالُوا ۚ أَدْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۚ قَالَ إِنَّهُ ۚ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ ۚ لَا فَارِصٌ ۚ وَلَا بَكْرٌ عَوَانٌ ۚ بَيْنَ ذَٰلِكَ ۚ فَافْعَلُوا ۚ مَا تُؤْمَرُونَ

(तब वह लोग कहने लगे कि (अच्छा) तुम अपने खुदा से दुआ करो कि हमें बता दे कि वह गाय कैसी हो मूसा ने कहा बेशक खुदा ने फरमाता है कि वह गाय न तो बहुत बूढ़ी हो और न बछिया बल्कि उनमें से औसत दर्जे की हो, गरज़ जो तुमको हुक्म दिया गया उसको बजा लाओ

قَالُوا ۖ اَدْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا لُونُهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ ۖ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ ۖ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ ۚ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النُّظَرِينَ

वह कहने लगे (वाह) तुम अपने खुदा से दुआ करो कि हमें ये बता दे कि उसका रंग आखिर क्या हो मूसा ने कहा बेशक खुदा फरमाता है कि वह गाय खूब गहरे ज़र्द रंग की हो देखने वाले उसे देखकर खुश हो जाए

قَالُوا ۖ اَدْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ ۚ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَبَّهُ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ

तब कहने लगे कि तुम अपने खुदा से दुआ करो कि हमें ज़रा ये तो बता दे कि वह (गाय) और कैसी हो (वह) गाय तो और गायों में मिल जुल गई और खुदा ने चाहा तो हम ज़रूर (उसका) पता लगा लेगे

قَالَ إِنَّهُ ۖ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ ۖ لَا ذَلُولٌ ۖ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ ۖ لَا شَيْءَ فِيهَا ۚ قَالُوا ۖ أَلَّنْ جِئْتَ بِالْحَقِّ ۚ فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا ۖ يَفْعَلُونَ

मूसा ने कहा खुदा ज़रूर फरमाता है कि वह गाय न तो इतनी सधाई हो कि ज़मीन जोते न खेती सीचें भली चंगी एक रंग की कि उसमें कोई धब्बा तक न हो, वह बोले अब (जा के) ठीक-ठीक बयान किया, गरज़ उन लोगों ने वह गाय हलाल की हालाँकि उनसे उम्मीद न थी वह कि वह ऐसा करेंगे

وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا ۖ فَادْرَأْتُمْ فِيهَا ۚ وَاللَّهُ مُخْرِجٌ ۚ مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ

और जब एक शख्स को मार डाला और तुममें उसकी बाबत फूट पड़ गई एक दूसरे को क्रांतिल बताने लगा जो तुम छिपाते थे

فَقُلْنَا أَضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا ۚ كَذَلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ وَيُرِيكُمْ ءَايَاتِهِ ۚ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

खुदा को उसका ज़ाहिर करना मंज़ूर था पस हमने कहा कि उस गाय को कोई टुकड़ा लेकर इस (की लाश) पर मारो यूँ खुदा मुर्दे को ज़िन्दा करता है और तुम को अपनी कुदरत की निशानियाँ दिखा देता है

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِّنْ ۚ بَعْدِ ذَٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ۚ ۚ وَإِنَّ مِّنَ
الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ ۚ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ ۚ ۚ وَإِنَّ
مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ وَمَا اللَّهُ بِغَفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ

ताकि तुम समझो फिर उसके बाद तुम्हारे दिल सख्त हो गये पस वह मिसल पत्थर के (सख्त) थे या उससे भी ज्यादा करख्त क्योंकि पत्थरों में बाज़ तो ऐसे होते हैं कि उनसे नहरें जारी हो जाती हैं और बाज़ ऐसे होते हैं कि उनमें दरार पड़ जाती है और उनमें से पानी निकल पड़ता है और बाज़ पत्थर तो ऐसे होते हैं कि खुदा के खौफ से गिर पड़ते हैं और जो कुछ तुम कर रहे हो उससे खुदा ग़ाफिल नहीं है

ۚ أَفَتَطْمَعُونَ أَن يُؤْمِنُوا ۚ لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ
يَحَرِّفُونَهُ ۚ ۚ مِّنْ ۚ بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ

(मुसलमानों) क्या तुम ये लालच रखते हो कि वह तुम्हारा (सा) ईमान लाएँगे हालाँकि उनमें का एक गिरोह (साबिक में) ऐसा था कि खुदा का कलाम सुनाता था और अच्छी तरह समझने के बाद उलट फेर कर देता था हालाँकि वह खूब जानते थे और जब उन लोगों से मुलाकात करते हैं

وَإِذَا لَقُوا ۚ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ قَالُوا ۚ ءَامَنَّا وَإِذَا خَلَا بِغُسْطِهِمْ إِلَىٰ بَعْضٍ ۚ قَالُوا ۚ
أُتِّحَتْهُمْ بِمَا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوكُمْ بِهِ ۚ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

जो ईमान लाए तो कह देते हैं कि हम तो ईमान ला चुके और जब उनसे बाज़-बाज़ के साथ तखिलिया करते हैं तो कहते हैं कि जो कुछ खुदा ने तुम पर (तौरित) में ज़ाहिर कर दिया है क्या तुम (मुसलमानों को) बता दोगे ताकि उसके सबब से कल तुम्हारे खुदा के पास तुम पर हुज्जत लाएँ क्या तुम इतना भी नहीं समझते

أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ

लेकिन क्या वह लोग (इतना भी) नहीं जानते कि वह लोग जो कुछ छिपाते हैं या ज़ाहिर करते हैं खुदा सब कुछ जानता है

وَمِنْهُمْ أُمِّيُونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانِيٍّ وَإِنَّهُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ

और कुछ उनमें से ऐसे अनपढ़ हैं कि वह किताबे खुदा को अपने मतलब की बातों के सिवा कुछ नहीं समझते और वह फकत ख्याली बातें किया करते हैं,

فَوَيْلٌ ۚ لِلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ۚ
ثَمَنًا ۚ قَلِيلًا ۚ ۱ ۚ فَوَيْلٌ ۚ لَهُمْ مِمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ ۚ لَهُمْ مِمَّا يَكْسِبُونَ

पस वाए हो उन लोगों पर जो अपने हाथ से किताब लिखते हैं फिर (लोगों से कहते फिरते) हैं कि ये खुदा के यहाँ से (आई) है ताकि उसके जरिये से थोड़ी सी कीमत (दुनियावी फ़ायदा) हासिल करें पस अफसोस है उन पर कि उनके हाथों ने लिखा और फिर अफसोस है उनपर कि वह ऐसी कमाई करते हैं

وَقَالُوا ۚ لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا ۚ مَّعْدُودَةً ۚ ۲ ۚ قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا ۚ فَلَن يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ ۚ ۳ ۚ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ

और कहते हैं कि गिनती के चन्द दिनों के सिवा हमें आग छुएगी भी तो नहीं (ऐ रसूल) इन लोगों से कहो कि क्या तुमने खुदा से कोई इकरार ले लिया है कि फिर वह किसी तरह अपने इकरार के खिलाफ़ हरगिज़ न करेगा या बे समझे बूझे खुदा पर बोहताव जोड़ते हो

بَلَىٰ مَن كَسَبَ سَيِّئَةً ۚ وَأَحْطَتْ بِهِ ۚ ۴ ۚ خَطِيئَتُهُ ۚ فَأُوۥلَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۚ ۵ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

हाँ (सच तो यह है) कि जिसने बुराई हासिल की और उसके गुनाहों ने चारों तरफ से उसे घेर लिया है वही लोग तो दोज़खी हैं और वही (तो) उसमें हमेशा रहेंगे

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ ۶ ۚ أُوۥلَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۚ ۷ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

और जो लोग ईमानदार हैं और उन्होंने अच्छे काम किए हैं वही लोग जन्नती हैं कि हमेशा जन्नत में रहेंगे

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ وَذِي الْقُرْبَىٰ
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا ۖ وَأَقِيمُوا ۖ الصَّلَاةَ وَآتُوا ۖ الزَّكَاةَ
ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۖ مِّنْكُمْ وَأَنتُمْ مُّعْرِضُونَ

और (वह वक्त याद करो) जब हमने बनी ईसराइल से (जो तुम्हारे बुर्जुग थे) अहद व पैमान लिया था कि खुदा के सिवा किसी की इबादत न करना और माँ बाप और कराबतदारों और यतीमों और मोहताजों के साथ अच्छे सुलूक करना और लोगों के साथ अच्छी तरह (नरमी) से बातें करना और बराबर नमाज़ पढ़ना और ज़कात देना फिर तुममें से थोड़े आदिमियों के सिवा (सब के सब) फिर गए और तुम लोग हो ही इकरार से मुँह फेरने वाले

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَاءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُونَ أَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ
وَأَنتُمْ تَشْهَدُونَ

और (वह वक्त याद करो) जब हमने तुम (तुम्हारे बुर्जुगों) से अहद लिया था कि आपस में खूरेज़ियाँ न करना और न अपने लोगों को शहर बदर करना तो तुम (तुम्हारे बुर्जुगों) ने इकरार किया था और तुम भी उसकी गवाही देते हो

ثُمَّ أَنْتُمْ هَؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُونَ فَرِيقًا ۖ مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ تَظْهَرُونَ عَلَيْهِمْ
بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَنِ وَإِنْ يَأْتُوكُمْ أُسْرَىٰ تَفْذُوهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ إِخْرَاجُهُمْ ۖ
أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ الْكِتَابِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ ۖ ۚ فَمَا جَزَاءُ مَن يَفْعَلُ ذَلِكَ مِنْكُمْ إِلَّا
خِزْيٌ ۖ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ يُرَدُّونَ إِلَىٰ أَشَدِّ الْعَذَابِ ۖ وَمَا اللَّهُ بِغَفِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُونَ

(कि हाँ ऐसा हुआ था) फिर वही लोग तो तुम हो कि आपस में एक दूसरे को क़त्ल करते हो और अपनों से एक जत्थे के नाहक और ज़बरदस्ती हिमायती बनकर दूसरे को शहर बदर करते हो (और लुत्फ़ तो ये है कि) अगर वही लोग कैदी बनकर तुम्हारे पास (मदद माँगने) आए तो उनको तावान देकर छुड़ा लेते हो हालाँकि उनका निकालना ही तुम पर हाराम किया गया था तो फिर क्या तुम (किताबे खुदा की) बाज़ बातों पर ईमान रखते हो और बाज़ से इन्कार करते हो पस तुम में से जो लोग ऐसा करें उनकी सज़ा इसके सिवा और कुछ नहीं कि ज़िन्दगी भर की रूसवाई हो और (आखिरकार) क़यामत के दिन सख्त अज़ाब की तरफ लौटा दिये जाए और जो कुछ तुम लोग करते हो खुदा उससे ग़ाफ़िल नहीं है

أَوَلَيْكَ الَّذِينَ اشْتَرَوْا ۚ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۚ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ

यही वह लोग हैं जिन्होंने आखिरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी खरीद पस न उनके अज़ाब ही में तख़्लीफ़ (कमी) की जाएगी और न वह लोग किसी तरह की मदद दिए जाएँगे

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَقَفَّيْنَا مِنْ ۚ بَعْدِهِ ۚ بِالرُّسُلِ ۚ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ ۚ أَفَكُلَّمَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ ۚ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنْفُسُكُمْ أَسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيقًا ۚ كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا ۚ تَقْتُلُونَ

और ये हक़ीक़ी बात है कि हमने मूसा को किताब (तौरेत) दी और उनके बाद बहुत से पैग़म्बरों को उनके क़दम ब क़दम ले चलें और मरियम के बेटे ईसा को (भी बहुत से) वाज़ेए व रौशन मौज़िजे दिए और पाक रूह जिबरील के ज़रिये से उनकी मदद की क्या तुम उस क़दर बददिमाज़ हो गए हो कि जब कोई पैग़म्बर तुम्हारे पास तुम्हारी ख्वाहिशे नफ़सानी के खिलाफ़ कोई हुक्म लेकर आया तो तुम अकड़ बैठे फिर तुमने बाज़ पैग़म्बरों को तो झुठलाया और बाज़ को जान से मार डाला

وَقَالُوا ۚ قُلُوبُنَا غُلْفٌ ۚ ۚ بَلْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا ۚ مَّا يُؤْمِنُونَ

और कहने लगे कि हमारे दिलों पर ग़िलाफ़ चढ़ा हुआ है (ऐसा नहीं) बल्कि उनके कुफ़्र की वजह से खुदा ने उनपर लानत की है पस कम ही लोग ईमान लाते हैं

وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ ۚ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ ۚ لِمَا مَعَهُمْ وَكَانُوا ۚ مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَلَمَّا جَاءَهُمْ مَّا عَرَفُوا ۚ كَفَرُوا ۚ بِهِ ۚ ۚ فَلَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكَافِرِينَ

और जब उनके पास खुदा की तरफ़ से किताब (कुरान आई और वह उस किताब तौरेत) की जो उन के पास तसदीक़ भी करती है। और उससे पहले (इसकी उम्मीद पर) काफ़िरों पर फतेहयाब होने की दुआएँ माँगते थे पस जब उनके पास वह चीज़ जिसे पहचानते थे आ गई तो लगे इन्कार करने पस काफ़िरों पर खुदा की लानत है

بُسْمًا أَشْتَرُوا ۚ بِهِ ۚ أَنْفُسُهُمْ أَنْ يَكْفُرُوا ۚ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ بَغْيًا أَنْ يَنْزِلَ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ فَبَاءُوا بِغَضَبٍ عَلَى غَضَبٍ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ۚ

क्या ही बुरा है वह काम जिसके मुकाबले में (इतनी बात पर) वह लोग अपनी जानें बेच बैठे हैं कि खुदा अपने बन्दों से जिस पर चाहे अपनी इनायत से किताब नाज़िल किया करे इस रश्क से जो कुछ खुदा ने नाज़िल किया है सबका इन्कार कर बैठे पस उन पर ग़ज़ब पर ग़ज़ब टूट पड़ा और काफ़िरो के लिए (बड़ी) रूसवाई का अज़ाब है

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ ءَامِنُوا ۚ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا ۚ نُوْمِنُ بِمَا أَنْزَلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَاءَهُ ۚ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَهُمْ ۚ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنْبِيَاءَ اللَّهِ مِنْ قَبْلُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

और जब उनसे कहा गया कि (जो कुरान) खुदा ने नाज़िल किया है उस पर ईमान लाओ तो कहने लगे कि हम तो उसी किताब (तौरत) पर ईमान लाए हैं जो हम पर नाज़िल की गई थी और उस किताब (कुरान) को जो उसके बाद आई है नहीं मानते हैं हालाँकि वह (कुरान) हक़ है और उस किताब (तौरत) की जो उनके पास है तसदीक भी करती है मगर उस किताब कुरान का जो उसके बाद आई है इन्कार करते हैं (ऐ रसूल) उनसे ये तो पूछो कि तुम (तुम्हारे बुर्जुग) अगर ईमानदार थे तो फिर क्यों खुदा के पैगम्बरों का साबिक क़त्ल करते थे

ۚ وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ ۚ بَعْدِهِ ۚ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ

और तुम्हारे पास मूसा तो वाज़े व रौशन मौजिज़े लेकर आ ही चुके थे फिर भी तुमने उनके बाद बछड़े को खुदा बना ही लिया और उससे तुम अपने ही ऊपर ज़ुल्म करने वाले थे

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمْ الطُّورَ خُذُوا ۚ مَا آتَيْنُكُمْ بِقُوَّةٍ ۚ وَأَسْمَعُوا ۚ ۚ
 قَالُوا ۚ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأُشْرِبُوا ۚ فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۚ قُلْ بِسْمَا يَأْمُرُكُمْ
 بِهِ ۚ ۚ إِيْمُنُكُمْ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

और (वह वक्त याद करो) जब हमने तुमसे अहद लिया और (कोहे) तूर को (तुम्हारी उदूले हुक्मी से) तुम्हारे सर पर लटकाया और (हमने कहा कि ये किताब तौरत) जो हमने दी है मज़बूती से लिए रहो और (जो कुछ उसमें है) सुनो तो कहने लगे सुना तो (सही लेकिन) हम इसको मानते नहीं और उनकी बेईमानी की वजह से (गोया) बछड़े की उलफ़त घोल के उनके दिलों में पिला दी गई (ऐ रसूल) उन लोगों से कह दो कि अगर तुम ईमानदार थे तो तुमको तुम्हारा ईमान क्या ही बुरा हुक्म करता था

قُلْ إِن كَانَتْ لَكُمْ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً ۚ مِّنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوْا ۚ
 الْمَوْتَ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

(ऐ रसूल) इन लोगों से कह दो कि अगर खुदा के नज़दीक आख़िरत का घर (बेहिश्त) खास तुम्हारे वास्ते है और लोगों के वासते नहीं है पस अगर तुम सच्चे हो तो मौत की आरजू करो

وَلَن يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا ۚ ۚ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ۚ بِالظَّالِمِينَ

(ताकि जल्दी बेहिश्त में जाओ) लेकिन वह उन आमाले बद की वजह से जिनको उनके हाथों ने पहले से आगे भेजा है हरगिज़ मौत की आरजू न करेंगे और खुदा ज़ालिमों से खूब वाक्फ़ है

وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَى حَيَوَةٍ ۚ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ ۚ يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ
 يُعَمَّرَ أَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحَّزِّهِ ۚ ۚ مِنَ الْعَذَابِ ۚ أَن يُعَمَّرَ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ ۚ ۚ بِمَا
 يَعْمَلُونَ

और (ऐ रसूल) तुम उन ही को ज़िन्दगी का सबसे ज्यादा हरीस पाओगे और मुशरिकों में से हर एक शख्स चाहता है कि काश उसको हजार बरस की उम्र दी जाती हालाँकि अगर इतनी तूलानी उम्र भी दी जाए तो वह खुदा के अज़ाब से छुटकारा देने वाली नहीं, और जो कुछ वह लोग करते हैं खुदा उसे देख रहा है

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ ۖ عَلَىٰ قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ

(ऐ रसूल उन लोगों से) कह दो कि जो जिबरील का दुश्मन है (उसका खुदा दुश्मन है) क्योंकि उस फ़रिश्ते ने खुदा के हुक्म से (इस कुरान को) तुम्हारे दिल पर डाला है और वह उन किताबों की भी तसदीक करता है जो (पहले नाज़िल हो चुकी हैं और सब) उसके सामने मौजूद हैं और ईमानदारों के वास्ते खुशखबरी है

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ ۖ وَرُسُلِهِ ۖ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِّلْكَافِرِينَ

जो शख्स खुदा और उसके फरिश्तों और उसके रसूलों और (खासकर) जिबराईल व मीकाइल का दुश्मन हो तो बेशक खुदा भी (ऐसे) काफ़िरों का दुश्मन है

وَلَقَدْ أَنزَلْنَا إِلَيْكَ ءَايَاتٍ ۖ بَيِّنَاتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفَاسِقُونَ

और (ऐ रसूल) हमने तुम पर ऐसी निशानियाँ नाज़िल की हैं जो वाजेए और रौशन हैं और ऐसे नाफरमानों के सिवा उनका कोई इन्कार नहीं कर सकता

أَوْكُلَمَا عَهِدُوا ۖ عَهْدًا ۖ نَّبَذَهُ ۖ فَرِيقٌ ۖ مِّنْهُمْ ۖ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

और उनकी ये हालत है कि जब कभी कोई अहद किया तो उनमें से एक फरीक ने तोड़ डाला बल्कि उनमें से अक्सर तो ईमान ही नहीं रखते

وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ ۖ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا ۖ الْكِتَابَ كِتَابَ اللَّهِ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

और जब उनके पास खुदा की तरफ से रसूल (मोहम्मद) आया और उस किताब (तौरैत) की जो उनके पास है तसदीक भी करता है तो उन अहले किताब के एक गिरोह ने किताबे खुदा को अपने पसे पुश्त फेंक दिया गोया वह लोग कुछ जानते ही नहीं और उस मंत्र के पीछे पड़ गए

وَاتَّبِعُوا ۚ مَا تَتْلُوا ۚ الشَّيْطَانُ عَلَىٰ مُلْكٍ سَلِيمٍ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٌ وَلَكِنَّ
 الشَّيْطَانَ كَفَرُوا ۚ يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ وَمَا أُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هُرُوتَ
 وَمُرُوتَ ۚ وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ ۚ فَلَا تَكْفُرْ ۚ فَيَتَعَلَّمُونَ
 مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ ۚ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ ۚ وَمَا هُمْ بِضَارِّينَ بِهِ ۚ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا
 بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۚ وَلَقَدْ عَلِمُوا ۚ لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ ۚ
 فِي آخِرَةِ مِنْ خَلْقٍ ۚ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا ۚ بِهِ ۚ أَنْفُسَهُمْ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ

जिसको सुलेमान के जमाने की सलतनत में शयातीन जपा करते थे हालाँकि सुलेमान ने कुफ्र नहीं इखतेयार किया लेकिन शैतानों ने कुफ्र एखतेयार किया कि वह लोगों को जादू सिखाया करते थे और वह चीजें जो हारूत और मारूत दोनों फ़रिश्तों पर बाइबिल में नाज़िल की गई थी हालाँकि ये दोनों फ़रिश्ते किसी को सिखाते न थे जब तक ये न कह देते थे कि हम दोनों तो फ़क़त (ज़रियाएँ आज़माइश) हैं पस तो (इस पर अमल करके) बेईमान न हो जाना उस पर भी उनसे वह (टोटके) सीखते थे जिनकी वजह से मिया बीबी में तफ़रका डालते हालाँकि बग़ैर इज्जे खुदावन्दी वह अपनी इन बातों से किसी को ज़रर नहीं पहुँचा सकते थे और ये लोग ऐसी बातें सीखते थे जो खुद उन्हें नुक़सान पहुँचाती थी और कुछ (नफ़ा) पहुँचाती थी बावजूद कि वह यक़ीनन जान चुके थे कि जो शख्स इन (बुराईयों) का ख़रीदार हुआ वह आख़िरत में बेनसीब हैं और बेशुबह (मुआवज़ा) बहुत ही बड़ा है जिसके बदले उन्होंने अपनी जानों को बेचा काश (उसे कुछ) सोचे समझे होते

وَلَوْ أَنَّهُمْ ءَامَنُوا ۚ وَاتَّقَوْا ۚ لَمَثُوبَةٌ ۚ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ

और अगर वह ईमान लाते और जादू वग़ैरह से बचकर परहेज़गार बनते तो खुदा की दरगाह से जो सवाब मिलता वह उससे कहीं बेहतर होता काश ये लोग (इतना तो) समझते

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَقُولُوا ۚ رُعِنَا وَقُولُوا ۚ أَنْظِرْنَا وَأَسْمِعُوا ۚ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ
 عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

ऐ ईमानवालों तुम (रसूल को अपनी तरफ़ मुतावज्जे करना चाहो तो) रआना (हमारी रिआयत कर) न कहा करो बल्कि उनज़ुरना (हम पर नज़रे तवज्जो रख) कहा करो और (जी लगाकर) सुनते रहो और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है

مَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ ۖ
مِنْ رَبِّكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ ۚ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

ऐ रसूल अहले किताब में से जिन लोगों ने कुफ्र इखतेयार किया वह और मुशरेकीन ये नहीं चाहते हैं कि तुम पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से भलाई (वही) नाज़िल की जाए और (उनका तो इसमें कुछ इजारा नहीं) खुदा जिसको चाहता है अपनी रहमत के लिए खास कर लेता है और खुदा बड़ा फज़ल (करने) वाला है

ۚ مَا نَنْسَخْ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ ۚ مِنْهَا أَوْ مِثْلَهَا ۚ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

(ऐ रसूल) हम जब कोई आयत मन्सूख करते हैं या तुम्हारे ज़ेहन से मिटा देते हैं तो उससे बेहतर या वैसी ही (और) नाज़िल भी कर देते हैं क्या तुम नहीं जानते कि बेशुबहा खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ ۚ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ ۚ وَلَا نَصِيرٍ

क्या तुम नहीं जानते कि आसमान की सलतनत बेशुबहा खास खुदा ही के लिए है और खुदा के सिवा तुम्हारा न कोई सरपरस्त है न मददगार

أَمْ تُرِيدُونَ أَنْ تَسْأَلُوا ۚ رَسُولَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَنْ يَتَّبِعِ الْكُفْرَ
بِالْإِيمَنِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ

(मुसलमानों) क्या तुम चाहते हो कि तुम भी अपने रसूल से वैसे ही (बेढ़ंगे) सवालात करो जिस तरह साबिक़ (पहले) ज़माने में मूसा से (बेतुके) सवालात किए गए थे और जिस शख्स ने ईमान के बदले कुफ्र एख़तेयार किया वह तो यक़ीनी सीधे रास्ते से भटक गया

وَدَّ كَثِيرٌ ۚ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَرُدُّونَكُمْ مِّنْ ۚ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كُفَّارًا حَسَدًا ۚ مِّنْ عِنْدِ
 أَنفُسِهِمْ مِّنْ ۚ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوا ۚ وَأَصْفَحُوا ۚ حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ
 بِأَمْرِهِ ۚ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ

(मुसलमानों) अहले किताब में से अक्सर लोग अपने दिली हसद की वजह से ये ख्वाहिश रखते हैं कि तुमको ईमान लाने के बाद फिर काफ़िर बना दें (और लुत्फ तो ये है कि) उन पर हक़ ज़ाहिर हो चुका है उसके बाद भी (ये तमन्ना बाक़ी है) पस तुम माफ़ करो और दरगुज़र करो यहाँ तक कि खुदा अपना (कोई और) हुक्म भेजे बेशक़ खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है

وَأَقِيمُوا ۚ الصَّلَاةَ وَآتُوا ۚ الزَّكَاةَ ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا ۚ لِأَنفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ ۚ تَجِدُوهُ
 عِنْدَ اللَّهِ ۚ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ

और नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात दिये जाओ और जो कुछ भलाई अपने लिए (खुदा के यहाँ) पहले से भेज दोगे उस (के सवाब) को मौजूद पाओगे जो कुछ तुम करते हो उसे खुदा ज़रूर देख रहा है

وَقَالُوا ۚ لَن يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَن كَانَ هُودًا أَوْ نَصْرَىٰ ۚ تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۚ قُلْ هَاتُوا ۚ
 بُرْهَانَكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

और (यहूद) कहते हैं कि यहूद (के सिवा) और (नसारा कहते हैं कि) नसारा के सिवा कोई बेहिश्त में जाने ही न पाएगा ये उनके ख्याली पुलाव है (ऐ रसूल) तुम उन से कहो कि भला अगर तुम सच्चे हो कि हम ही बेहिश्त में जाएँगे तो अपनी दलील पेश करो

بَلَىٰ مَن أَسْلَمَ وَجْهَهُ ۚ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ ۚ فَلَهُ ۚ أَجْرُهُ ۚ عِنْدَ رَبِّهِ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
 وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

हाँ अलबत्ता जिस शख्स ने खुदा के आगे अपना सर झुका दिया और अच्छे काम भी करता है तो उसके लिए उसके परवरदिगार के यहाँ उसका बदला (मौजूद) है और (आख़ेरत में) ऐसे लोगों पर न किसी तरह का खौफ़ होगा और न ऐसे लोग ग़मगीन होंगे

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتْ النَّصْرَى عَلَى شَيْءٍ ۚ وَقَالَتِ النَّصْرَى لَيْسَتْ الْيَهُودُ عَلَى شَيْءٍ ۚ وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتَابَ ۚ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا ۚ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ

और यहूद कहते हैं कि नसारा का मज़हब कुछ (ठीक) नहीं और नसारा कहते हैं कि यहूद का मज़हब कुछ (ठीक) नहीं हालाँकि ये दोनों फरीक़ किताबे (खुदा) पढ़ते रहते हैं इसी तरह उन्हीं जैसी बातें वह (मुशरेकीन अरब) भी किया करते हैं जो (खुदा के एहकाम) कुछ नहीं जानते तो जिस बात में ये लोग पड़े झगड़ते हैं (दुनिया में तो तय न होगा) क़यामत के दिन खुदा उनके दरमियान ठीक फैसला कर देगा

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ مَسْجِدَ اللَّهِ أَنْ يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ ۚ وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهَا ۚ أُولَٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۚ وَلَهُمْ فِي آٰلِ آٰخِرَةٍ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ

और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो खुदा की मसजिदों में उसका नाम लिए जाने से (लोगों को) रोके और उनकी बरबादी के दर पे हो, ऐसों ही को उसमें जाना मुनासिब नहीं मगर सहमे हुए ऐसे ही लोगों के लिए दुनिया में रूसवाई है और ऐसे ही लोगों के लिए आखेरत में बड़ा भारी अज़ाब है

وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا ۚ فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ وَسِعَ عِلْمُهُ ۚ

(तुम्हारे मसजिद में रोकने से क्या होता है क्योंकि सारी ज़मीन) खुदा ही की है (क्या) पूरब (क्या) पश्चिम बस जहाँ कहीं क़िब्ले की तरफ रूख़ करो वही खुदा का सामना है बेशक खुदा बड़ी गुन्जाइश वाला और खूब वाक़िफ़ है

وَقَالُوا ۚ اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ ا ۚ سُبْحٰنَهُ ۚ ۚ بَلْ لَهُ ۚ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ كُلُّ ۚ لَهُ ۚ قِنٰتُونَ

और यहूद कहने लगे कि खुदा औलाद रखता है हालाँकि वह (इस बखेड़े से) पाक है बल्कि जो कुछ ज़मीन व आसमान में है सब उसी का है और सब उसकी के फरमाबरदार हैं

بَدِيعُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا ۖ فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ ۚ كُن فَيَكُونُ

(वही) आसमान व ज़मीन का मोजिद है और जब किसी काम का करना ठान लेता है तो उसकी निसबत सिर्फ कह देता है कि "हो जा" पस वह (खुद ब खुद) हो जाता है

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ أَوْ تَأْتِينَا آيَةٌ ۚ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ تَشَبَّهَتْ قُلُوبُهُمْ ۚ قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ

और जो (मुशरेकीन) कुछ नहीं जानते कहते हैं कि खुदा हमसे (खुद) कलाम क्यों नहीं करता, या हमारे पास (खुद) कोई निशानी क्यों नहीं आती, इसी तरह उन्हीं की सी बातें वह कर चुके हैं जो उनसे पहले थे उन सब के दिल आपस में मिलते जुलते हैं जो लोग यक़ीन रखते हैं उनको तो अपनी निशानियाँ क्यों साफ़तौर पर दिखा चुके

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا ۖ وَنَذِيرًا ۚ وَلَا تُسْأَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ

(ऐ रसूल) हमने तुमको देने हक़ के साथ (बेहिश्त की) खुशख़बरी देने वाला और (अज़ाब से) डराने वाला बनाकर भेजा है और दोज़खियों के बारे में तुमसे कुछ न पूछा जाएगा

وَلَنْ تَرْضَىٰ عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۚ قُلْ إِنْ هَدَىٰ اللَّهُ هُوَ الْهُدَىٰ ۚ وَلَئِنْ أَتَبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۚ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ ۚ وَلَا نَصِيرٍ

और (ऐ रसूल) न तो यहूदी कभी तुमसे रज़ामंद होंगे न नसारा यहाँ तक कि तुम उनके मज़हब की पैरवी करो (ऐ रसूल उनसे) कह दो कि बस खुदा ही की हिदायत तो हिदायत है (बाक़ी ढकोसला है) और अगर तुम इसके बाद भी कि तुम्हारे पास इल्म (कुरान) आ चुका है उनकी ख्वाहिशों पर चले तो (याद रहे कि फिर) तुमको खुदा (के ग़ज़ब) से बचाने वाला न कोई सरपरस्त होगा न मददगार

الَّذِينَ ءَاتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ ۚ حَقَّ تِلَاوَتِهِ ۚ أُوْلَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ ۚ فَأُوْلَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ

जिन लोगों को हमने किताब (कुरान) दी है वह लोग उसे इस तरह पढ़ते रहते हैं जो उसके पढ़ने का हक़ है यही लोग उस पर ईमान लाते हैं और जो उससे इनकार करते हैं वही लोग घाटे में हैं

يَبْنِي إِسْرَءِيلَ أَذْكُرُوا؟ نِعْمَتِي الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ

बनी इसराईल मेरी उन नेअमतों को याद करो जो मैंने तुम को दी हैं और ये कि मैंने तुमको सारे जहाँ पर फज़ीलत दी

وَاتَّقُوا؟ يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنْفَعُهَا شَفْعَةٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ

और उस दिन से डरो जिस दिन कोई शख्स किसी की तरफ से न फिदया हो सकेगा और न उसकी तरफ से कोई मुआवेज़ा कुबूल किया जाएगा और न कोई सिफारिश ही फायदा पहुचा सकेगी, और न लोग मदद दिए जाएंगे

وَاذِ ابْتَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ؟ مَ رَبُّهُ؟ بِكَلِمَاتٍ فَأَتَمَّهُنَّ؟ قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا؟ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي؟ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظَّالِمِينَ

(ऐ रसूल) बनी इसराईल को वह वक्त भी याद दिलाओ जब इबराहीम को उनके परवरदिगार ने चन्द बातों में आजमाया और उन्होंने पूरा कर दिया तो खुदा ने फरमाया मैं तुमको (लोगों का) पेशवा बनाने वाला हूँ (हज़रत इबराहीम ने) अर्ज़ की और मेरी औलाद में से फरमाया (हाँ मगर) मेरे इस अहद पर ज़ालिमों में से कोई शख्स फ़ायज़ नहीं हो सकता

وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا؟ وَاتَّخِذُوا؟ مِنْ مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ؟ مَ مُصَلًّى؟ وَوَعَدْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ؟ مَ وَإِسْمَاعِيلَ أَن طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْعَاكِفِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ

(ऐ रसूल वह वक्त भी याद दिलाओ) जब हमने खानए काबा को लोगों के सवाब और पनाह की जगह करार दी और हुक्म दिया गया कि इबराहीम की (इस) जगह को नमाज़ की जगह बनाओ और इबराहीम व इसमाइल से अहद व पैमान लिया कि मेरे (उस) घर को तवाफ़ और एतकाफ़ और रूकू और सजदा करने वालों के वास्ते साफ सुथरा रखो

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ ۖ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا بَلَدًا ءَامِنًا ۖ وَأَرْزُقْ أَهْلَهُ ۖ مِنْ الثَّمَرَاتِ مَنْ ءَامَنَ مِنْهُمْ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَأُمَتِّعُهُ ۖ قَلِيلًا ۖ ثُمَّ أَضْطَرُّهُ ۖ إِلَىٰ عَذَابِ النَّارِ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ

और (ऐ रसूल वह वक्त भी याद दिलाओ) जब इबराहीम ने दुआ माँगी कि ऐ मेरे परवरदिगार इस (शहर) को पनाह व अमन का शहर बना, और उसके रहने वालों में से जो खुदा और रोज़े आखिरत पर ईमान लाए उसको तरह-तरह के फल खाने को दें खुदा ने फरमाया (अच्छा मगर) वो कुफ़र इखतेयार करेगा उसकी दुनिया में चन्द रोज़ (उन चीज़ों से) फायदा उठाने दूँगा फिर (आखिरत में) उसको मजबूर करके दोज़ख की तरफ खींच ले जाऊँगा और वह बहुत बुरा ठिकाना है

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ ۖ الْمَقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

और (वह वक्त याद दिलाओ) जब इबराहीम व इसमाईल खानाए काबा की बुनियादेँ बुलन्द कर रहे थे (और दुआ) माँगते जाते थे कि ऐ हमारे परवरदिगार हमारी (ये खिदमत) कुबूल कर बेशक तू ही (दूआ का) सुनने वाला (और उसका) जानने वाला है

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُّسْلِمَةً ۖ لَّكَ وَأَرْنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

(और) ऐ हमारे पालने वाले तू हमें अपना फरमाबरदार बन्दा बना हमारी औलाद से एक गिरोह (पैदा कर) जो तेरा फरमाबरदार हो, और हमको हमारे हज़ की जगहों दिखा दे और हमारी तौबा कुबूल कर, बेशक तू ही बड़ा तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا ۖ مِنْهُمْ يَتْلُو ۖ عَلَيْهِمْ ءَايَتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ ۖ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

(और) ऐ हमारे पालने वाले मक्के वालों में उन्हीं में से एक रसूल को भेज जो उनको तेरी आयतें पढ़कर सुनाए और आसमानी किताब और अक्ल की बातें सिखाए और उन (के नुफूस) के पाकीज़ा कर दें बेशक तू ही ग़ालिब और साहिबे तदबीर है

وَمَنْ يَرْغَبُ عَنْ مِلَّةِ إِبْرَاهِيمَ ۖ مَ إِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهُ ۚ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا ۚ وَإِنَّهُ ۚ فِي آخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ

और कौन है जो इबराहीम के तरीके से नफरत करे मगर जो अपने को अहमक बनाए और बेशक हमने उनको दुनिया में भी मुन्तिखब कर लिया और वह ज़रूर आखिरत में भी अच्छों ही में से होंगे

إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ ۙ أَطِيعُوا ۖ قَالَ أَتَسْلُمُ ۚ قَالَ أَتَسْلُمُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ

जब उनसे उनके परवरदिगार ने कहा इस्लाम कुबूल करो तो अर्ज़ में सारे जहाँ के परवरदिगार पर इस्लाम लाया

وَوَصَّىٰ بِهَا إِبْرَاهِيمَ ۖ مُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ ۖ يَبْنِي ۖ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ لَكُمُ الدِّينَ ۚ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُمْ مُسْلِمُونَ

और इसी तरीके की इबराहीम ने अपनी औलाद से वसीयत की और याकूब ने (भी) कि ऐ फरज़न्दों खुदा ने तुम्हारे वास्ते इस दीन (इस्लाम) को पसन्द फरमाया है पस तुम हरगिज़ न मरना मगर मुसलमान ही होकर

أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ ۖ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتُ ۖ إِذْ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِن ۚ بَعْدِي ۚ قَالُوا ۖ نَعْبُدُ إِلَٰهَكَ وَإِلَٰهَ آبَائِكَ ۖ إِبْرَاهِيمَ ۖ مَ وَإِسْمَاعِيلَ ۚ وَإِسْحَاقَ ۖ إِلَٰهًا ۚ وَحَدًّا ۚ وَنَحْنُ لَهُ ۖ مُسْلِمُونَ

(ऐ यहूद) क्या तुम उस वक्त मौजूद थे जब याकूब के सर पर मौत आ खड़ी हुई उस वक्त उन्होंने अपने बेटों से कहा कि मेरे बाद किसी की इबादत करोगे कहने लगे हम आप के माबूद और आप के बाप दादाओं इबराहीम व इस्माइल व इसहाक के माबूद व यकता खुदा की इबादत करेंगे और हम उसके फरमाबरदार हैं

تِلْكَ أُمَمَةٌ ۚ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

(ऐ यहूद) वह लोग थे जो चल बसे जो उन्होंने कमाया उनके आगे आया और जो तुम कमाओगे तुम्हारे आगे आएगा और जो कुछ भी वह करते थे उसकी पूछगछ तुमसे नहीं होगी

وَقَالُوا ۖ كُونُوا ۖ هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ تَهْتَدُوا ۚ ۚ قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ ۖ مَ حَنِيفٌ ۖ ا ۚ وَمَا
كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

(यहूदी ईसाई मुसलमानों से) कहते हैं कि यहूद या नसरानी हो जाओ तो राहे रास्त पर आ जाओगे (ऐ रसूल उनसे) कह दो कि हम इबराहीम के तरीके पर हैं जो बातिल से कतरा कर चलते थे और मुशरेकीन से न थे

قُولُوا ۖ ءَامَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۖ مَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ
وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ
بَيْنَ أَحَدٍ ۖ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ ۖ مُسْلِمُونَ

(और ऐ मुसलमानों तुम ये) कहो कि हम तो खुदा पर ईमान लाए हैं और उस पर जो हम पर नाज़िल किया गया (कुरान) और जो सहीफे इबराहीम व इसमाइल व इसहाक व याकूब और औलादे याकूब पर नाज़िल हुए थे (उन पर) और जो किताब मूसा व ईसा को दी गई (उस पर) और जो और पैगम्बरों को उनके परवरदिगार की तरफ से उन्हें दिया गया (उस पर) हम तो उनमें से किसी (एक) में भी तफरीक नहीं करते और हम तो खुदा ही के फरमाबरदार हैं

فَإِنْ ءَامَنُوا ۖ بِمِثْلِ مَا ءَامَنْتُمْ بِهِ ۖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ ۚ وَإِنْ تَوَلَّوْا ۖ فَإِنَّمَا هُمْ فِي
شِقَاقٍ ۚ ۚ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ ۖ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

पस अगर ये लोग भी उसी तरह ईमान लाए हैं जिस तरह तुम तो अलबत्ता राहे रास्त पर आ गए और अगर वह इस तरीके से मुँह फेर लें तो बस वह सिर्फ तुम्हारी ही ज़िद पर है तो (ऐ रसूल) उन (के शर) से (बचाने को) तुम्हारे लिए खुदा काफ़ी होगा और वह (सबकी हालत) खूब जानता (और) सुनता है

صِبْغَةَ اللَّهِ ۖ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً ۚ ۚ وَنَحْنُ لَهُ ۖ عِبْدُونَ

(मुसलमानों से कहो कि) रंग तो खुदा ही का रंग है जिसमें तुम रंगे गए और खुदाई रंग से बेहतर कौन रंग होगा और हम तो उसी की इबादत करते हैं

قُلْ أَتَحَاجُّونَنَا فِي اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَا أَعْمَلُنَا وَلَكُمْ أَعْمَلُكُمْ وَنَحْنُ لَهُ
مُخْلِصُونَ

(ऐ रसूल) तुम उनसे पूछो कि क्या तुम हम से खुदा के बारे झगड़ते हो हालाँकि वही हमारा (भी) परवरदिगार है (वही) तुम्हारा भी (परवरदिगार है) हमारे लिए है हमारी कारगुजारियाँ और तुम्हारे लिए तुम्हारी कारसतानियाँ और हम तो निरेखरे उसी में हैं

أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ ۖ م وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا ۚ هُودًا أَوْ
نَصْرَى ۚ قُلْ ءَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمْ اللَّهُ ۚ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَدَةً عِنْدَهُ ۚ مِنَ اللَّهِ ۚ
وَمَا اللَّهُ بِغَفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ

क्या तुम कहते हो कि इबराहीम व इसमाइल व इसहाक व आलौदें याकूब सब के सब यहूदी या नसरानी थे (ऐ रसूल उनसे) पूछो तो कि तुम ज्यादा वाक्फ़ हो या खुदा और उससे बढ़कर कौन ज़ालिम होगा जिसके पास खुदा की तरफ से गवाही (मौजूद) हो (कि वह यहूदी न थे) और फिर वह छिपाए और जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे बेखबर नहीं

تِلْكَ أُمَّةٌ ۚ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا ۚ
يَعْمَلُونَ

ये वह लोग थे जो सिधार चुके जो कुछ कमा गए उनके लिए था और जो कुछ तुम कमाओगे तुम्हारे लिए होगा और जो कुछ वह कर गुज़रे उसकी पूछगच्छ तुमसे न होगी